ईश्वर के साथ सेल्फी

रमेश जोशी

ईश्वर के साथ सेल्फी

(लघु हास्य-व्यंग्य आलेख)

(18 जून 2018 से 21 जनवरी 2019 तक)

रमेश जोशी की प्रकाशित पुस्तकें क्रमानुसार

1. कर्जे के ठाठ (हास्य-व्यंग्य कुण्डलिया संकलन)
2. रामधुन (हास्य-व्यंग्य कुण्डलिया संकलन)
3. पिता (कविता संकलन)
4. रास्ते में अटकी उपलब्धियाँ (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
5. बेगाने मौसम (गीतिका संकलन)
6. माई लेटर्स टू जार्ज बुश (हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)
6. कौन सुने इकतारा (गीतिका संकलन)
8. कुड़क मुर्गियों का लोकतंत्र (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
9. निरगुन कौन देस को बासी (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
10. देवता होने का दुःख (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
11. झुमका खोने की स्वर्ण जयंती (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
12. मूर्तियों से बंधे पशु (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
13. लीला का लायसेंस (हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)
14. ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया (हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)
15. लोकतंत्र का ब्लू व्हेल गेम (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
16. ईश्वर के साथ सेल्फी (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)

ईश्वर के साथ सेल्फी

रमेश जोशी

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2024

ISBN 978-93-90973-34-7

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-45506552, 7291920186, 09350809192

www : anuugyabooks.com

आवरण : किनेसिस क्रिएटिव ग्राफिक्स, भोपाल

अनुज्ञा बुक्स द्वारा भारत में मुद्रित

ISHWAR KE SAATH SELFI

Prose Satire by **Ramesh Joshi**

सूचनाओं के धुंधलके में
प्रायोजित छवि-निर्माण का छल-छद्म रचती
आत्ममुग्ध राजनीति के बीच
जलकर विवेक की रोशनी फैलाती
चंद तीलियों के नाम

अपनी बात

देश-दुनिया के अच्छे बुरे हालातों, कर्मों-कुकर्मों और नाटक-नौटंकियों पर इस नई सदी में तोताराम से साथ दैनंदिन संवाद करते हुए लिखी जा रही इस श्रृंखला में यह आठवाँ संकलन 'ईश्वर के साथ सेल्फी' हैं' सहज और निरपेक्ष भाव से जग का मुज़रा लेने वाले 'आप' के हाथों में है ।

इसमें 18 जून 2018 से 21 जनवरी 2019 तक की घटनाओं-सूचनाओं और विडंबनाओं पर आधारित आलेख सम्मिलित हैं।

लगभग सभी आलेख अपने ब्लॉग jhoothasach.blogspot.com/ nbtapnablog/राजस्थान के सबसे पुराने और प्रतिबद्ध हिंदी दैनिक नवज्योति तथा अन्य कई अखबारों और माध्यमों से पाठकों तक पहुँचते रहे हैं। सभी की प्रतिक्रियाओं के लिए आभार।

यह किसी पार्टी के लिए या किसी पक्ष विशेष के लिए किया गया कोई योजनाबद्ध लेखन नहीं है बल्कि सामान्य लोगों की सामान्य समझ के अनुसार अपने देशकाल का सहज मूल्यांकन है।

ये आलेख समाज रूपी मरीज़ की असली रिपोर्ट हैं जो कुछ विश्वास, कुछ अविश्वास और कुछ अंधविश्वास का एनास्थीशिया लेकर ओपरेशन टेबल पर अपने तथाकथित शुभचिंतक शल्य चिकित्सकों से घिरा लेटा है।

अब यह नेकनीयती, संयोग और भाग्य पर निर्भर है कि मरीज़ का क्या होगा?

फिर भी हमें मरीज़ के लिए कामना तो यही करनी चाहिए यदि बिचौलिए इसे भगवान तक पहुँचने दें।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

इस पुस्तक में आए सभी फोटो, कार्टूनों, सन्दर्भों, उद्धरणों आदि के लिए सभी संबंधित कलाकारों का हार्दिक आभार।

—रमेश जोशी

26 जनवरी 2019
सीकर (राजस्थान)

अनुक्रम

दो शब्द	6
1. खुशामदी उत्साह के अतिरेकी प्रदर्शन की प्रतियोगिता	11
2. योग-दिवस और तोताराम का 'बेबी डंप'	13
3. तोताराम का यो-यो टेस्ट	14
4. पूरी दुनिया एक	16
5. इमरजेंसी और यूजीसी	18
6. झुमके का अता-पता और नीरव मोदी का पासपोर्ट	19
7. मोदी, मगहर और तोताराम	21
8. पार्टी की पोलिटिक्स और परीक्षा	22
9. विकास और गुप्त विकास	23
10. लाभान्वित, लाभार्थी और सकाम कर्म	25
11. ईश्वर के साथ सेल्फी	26
12. सैमसंग और हमारी गौरव-वृद्धि	28
13. अमरीका की लिबर्टी और हमारी लिबर्टी	29
14. विश्वासः फलदायक	31
15. शिवाजी महाराज का क़द	33
16. तोताराम का गले मिलना	34
17. गले मिलने के भेद और भाव	36
18. आँख मारना और दिल का साइज़	38
19. काऊ पोलिटिक्स उर्फ़ हॉर्स ट्रेडिंग	39
20. जगद् गुरु जुगाड़ानंद	41
21. सदन में सर्वसम्मति	42
22. चुटकुले की बात और है	43
23. गौरक्षक तोताराम	45
24. रुतबे का रायता	46
25. खुशहाली और सुनहरा भविष्य	47
26. फरमाइशी भाषण उर्फ़ श्रावण सोमवार-कथा	49
27. गलत गुहार	50
28. अच्छे दिन आ गए हैं	51
29. शंका के सिद्धांत	53
30. स्वच्छता का त्यौहार	54

31. राजनीति की अक्षय ऊर्जा 56
32. सूचना की जन्नत का वर्जित फल 58
33. बीके-बिके, अनबिके 59
34. बायो फ्यूअल डे की बोधकथा उर्फ़ गकार की गड़बड़ 60
35. भारत की जनता समझ रखा है क्या? 62
36. कहा था न, शंका मत कर 63
37. छठा तत्त्व और समय का डंडा 64
38. अठारह अगस्त का महत्त्व 66
39. पाँचवाँ बल : कविता-बल 68
40. अपना जुगराफिया सँभाल 69
41. पैर ही तो दबाने हैं 70
42. केरल के बाढ़ पीड़ितों को समर्पित 72
43. राम बनाम अटल 73
44. समझाइश का समय उर्फ़ दुर्जन हिताय 75
45. एक बार फिर नोटबंदी 76
46. बन्दर भगाने का नुस्खा 78
47. सस्ती यात्रा बनाम अच्छे दिन 79
48. जी.एस.टी. वृद्धि 10% प्रति माह 81
49. जगद्गुरु की टांग उर्फ़ गौरव की ठसक 83
50. विवेकानंद और पिलपिला लड्डू 85
51. सखा, वह मुझसे मिल कर जाता 86
52. सफाई-स्वावलंबन की सनातन संस्कृति पर संकट 88
53. गाँधी के कोई और कार्यक्रम भी तो होंगे 90
54. चाय पर चर्चा : वोटर की जेब से खर्चा 91
55. जगद्गुरु जी टॉयलेट में हैं 93
56. मानदेय-महोत्सव' 94
57. अपराधी पहचानने वाली गोली 96
58. चेम्पियंस ऑफ़ अर्थ के लिए बधाई-यात्रा 98
59. सपना अब भी संभावना है 99
60. नेचुरल कॉल 101
61. ना उम्र की सीमा हो 102
62. जो माँगोगे वही मिलेगा 104
63. गंगा का बेटा 105
64. मी टू बनाम वी टू 107
65. परिवर्तन-पर्व 108

66. चलता फिरता चुटकुला 110
67. नेताजी की वापसी 111
68. तीस मार खाँ 112
69. लोकार्पण का विज्ञापन 114
70. एक पंथ तीन काज 116
71. नेहरू की प्रतिमा 117
72. लोहा और लौह-पुरुष 119
73. छलाँग : ऊँची या लम्बी 121
74. मोदी जी का विकल्प 122
75. प्रदूषण प्रतिरोध प्रन्यास 123
76. नामकरण के सिद्धांत 126
77. न्यूयार्क लिट् फेस्ट 127
78. टैगोर पर लदा पेप्सिको 129
79. दिवाली, हिन्दू और ट्रंप 130
80. विजय तो विजय है 132
81. स्वदेशी चश्मा बनाम मोतियाबिंद 133
82. शाहनवाज़ जी सब जानते हैं 134
83. अपना-अपना भाग्य 136
84. दासानुदास हनुमान 137
85. सबसे लम्बी जीभ 139
86. मुझे शाहरुख समझ रखा है क्या? 140
87. यह प्रोस्थेटिक्स क्या होता है? 142
88. हमारी नीयत : उनकी नीयत 144
89. हमारा सैंटा : उनका सैंटा 145
90. कौन गोत्र हो, भाई 146
91. आओ ट्विस्ट करें 148
92. अंतरिक्ष यात्री तोताराम 149
93. सेवकों की औकात 150
94. अपना-अपना 'जय अनुसन्धान' 152
95. हाथ, हाथ पर या माथे पर 153
96. समरसता-खिचड़ी 155
97. विश्व-रत्न सम्मान 156
98. पार्टी का राष्ट्रीय प्रवक्ता 158
99. पेंशन ही पेंशन : मिल तो लें 159

1. खुशामदी उत्साह के अतिरेकी प्रदर्शन की प्रतियोगिता

आज तोताराम ने आते ही बड़ा अजीब प्रश्न किया–धींगामुश्ती वैद्यजी के क्या हालचाल हैं?

हमने राज वैद्य, कविराज, भिषगाचार्य आदि शब्द तो सुने थे लेकिन यह 'धींगामुश्ती वैद्य जी' हमारे लिए नया शब्द था। अर्थ पूछा तो बोला– सुन-सुनाकर, बिना किसी उचित और पूर्ण ज्ञान के काम करने वाले आधे-अधूरे लोगों के लिए है यह शब्द। इसे उर्दू में नीमहकीम भी कहते हैं। नीम भी त्रिफला की तरह रोगनाशक होता है। पर इस नीम का उस नीम से कोई संबंध नहीं होता।

ऐसे ही किसी वैद्य ने त्रिफला के अनन्त गुणों का वर्णन सुनकर किसी गाँव में जाकर अपनी बैदगी जमा ली। सबको हर बीमारी में त्रिफला दे देता। एक दिन उसके पास एक आदमी आया। उसकी भैंस खो गई थी। वैसे तो वैद्य जी ने ऐसी कोई बीमारी का नाम सुना नहीं था लेकिन लालच के मारे ग्राहक को लौटाने का मन भी नहीं हुआ। सो उसे भी त्रिफला दे दी। और कुछ ज्यादा ही दे दी क्योंकि भैंस का मामला था। भैंस के मालिक को दस्त हो गए।

उन दिनों भारत अस्वच्छ नहीं था इसलिए 'स्वच्छ भारत' के तहत शौचालय वाली महामारी का फैशन भी नहीं चला था। इसलिए शुचिता के लिए घर से थोड़ा दूर जाना पड़ता था। संयोग ऐसा हुआ कि शाम को उसे गाँव के किसी खेड़े के पास खड़ी अपनी भैंस दिखाई दे गई। चमत्कारी इलाज। बैदगी जम गई। वैद्य जी पुज गए।

हमने पूछा– लेकिन इन नक्कालों को पहचानें कैसे?

बोला– आजकल देश में 'त्रिफला वैद्यंग' ही तो चल रही है। सभी समस्याओं– अराजकता, बेकारी और गरीबी के तीनों दोषों का 'त्रिदोषनाशक' एक ही इलाज चला हुआ है। अखबार,रेडियो, टीवी सबमें इन्हीं 'त्रिफला-वैद्यों' के विज्ञापन आते रहते हैं। 'स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत' मतलब शौचालय और है क्या?। सब कुछ कृष्णार्पणम की तरह सब कुछ शौचालयं। गाँधी जी के 'सत्याग्रह' जैसे महान शब्द को भी हथियाकर 'स्वच्छाग्रह' बना लिया। थोड़े दिनों में इसे 'शौचाग्रह' भी बनाया जा सकता है।

कोई यह भी नहीं कह सकता कि शौचालय बनाना अच्छी बात नहीं है। कोई यह प्रश्न भी नहीं कर सकता कि जब खाने को ही कुछ नहीं होगा तो शौचालय की ज़रूरत ही क्यों पड़ेगी। यह देश अब तक इन बंद और कमरेनुमा शौचालयों के बिना कैसे स्वस्थ और जीवित रह लिया?

कौन तर्क करे कि पहले मुर्गी थी या अंडा? मनुष्य ने भोजन पहले किया या पहले शौच गया? इसलिए बस एक ही काम चल पड़ा है– शौचालय। एक-एक दिन